ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 99-101
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

हिंदी साहित्य के इतिहास– लेखन की परंपरा

अखण्ड प्रताप सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी विभाग,
माधव प्रसाद त्रिपाठी राजकीय महिला महाविद्यालय खलीलाबाद–सन्तकबीरनगर (उ0प्र0), भारत

Received- 20.11.2018, Revised- 23.11.2018, Accepted - 26.12.2018 E-mail: - drapsdb@gmail.com

सारांश : ***इतिहास का शाब्दिक अर्थ है "ऐसा ही था" या "ऐसा ही हुआ"। अर्थात इतिहास का संबंध अतीत की यथार्थ घटनाओं से है। किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि इतिहास मात्र अतीत की घटनाओं एवं तथ्यों का पुंज है। इतिहास में अतीत की घटनाएं होती है, तथ्य होते हैं लेकिन वे अपने– आप में इतिहास नहीं हैं, वे इतिहास के मात्र साधन हैं। इतिहास में उन घटनाओं और तथ्यों के माध्यम से युग विशेष का मूल्यांकन किया जाता है। वास्तव में इतिहास अतीत और वर्तमान का अनवरत संवाद है। इतिहास न केवल हमें अतीत से परिचित कराता है, बल्कि वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में अतीत का मूल्यांकन भी करता है। हमारा वर्तमान, निरंतर अतीत में समाता जा रहा है। हम वर्तमान को तो देखते हैं किन्तु अतीत को सहजता से नहीं देख पाते। उसे देखना पड़ता है। अतीत को समझे बिना, न हम वर्तमान को समझ सकते हैं और न ही अपने आप को, क्योंकि हम जिस वर्तमान में रहते हैं, वह वर्तमान उन्हीं लोगों द्वारा बनाया गया होता है, जो इस समय अतीत में हैं। उनके सुख–दुख, समस्याओं से जूझने की उनकी कोशिशें, उनकी खोजें ,उनके आविष्कार, जिनके ताने–बाने से समाज में बदलाव आता है,वह बदलाव इतनी धीमी गति से होता है कि उस युग के लोगों को इसका पता ही नहीं चलता। बाद में जब हम देखते हैं तब हमें अंदाजा लगता है कि बदलाव कैसे आया। वर्तमान दुनिया,सदियों से हो रहे कितने बदलावों का परिणाम है हम यह तभी समझ पाते हैं, जब हम अतीत को देखते हैं।***

कुंजीभूत शब्द– इतिहास, अतीत,घटनाएं, तथ्यों, माध्यम, युग, मूल्यांकन, वास्तव, वर्तमान, अनवरत ।

वर्तमान के सहारे ही हम अतीत को देख या समझ पाते हैं। वर्तमान जब अतीत में बदलता है, तो कुछ न कुछ अवशेष वर्तमान में छोड़ जाता है, उन्ही अवशेषों जैसे– शिलालेख,ताम्रपत्र, सिक्के, इमारतें, लिखित सामग्री, आभूषण, उपकरण, मूर्तियां, बर्तन,मिथक, किंवदंतियों, आदि के माध्यम से हम अतीत को समझने की कोशिश करते हैं और इतिहास का पुनर्निर्माण करते हैं। निर्माण की इस प्रक्रिया में अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों का योगदान होता है, इसीलिए कहा जाता है कि इतिहास मात्र अतीत की घटनाओं और तथ्यों का विवरण या संकलन मात्र नहीं है, बल्कि युग विशेष की परंपराओं , प्रवृत्तियों एवं परिवर्तनों के मूल्यांकन एवं विश्लेषण के माध्यम से अतीत, वर्तमान और भविष्य को समझना है।

इतिहास का अध्ययन हम केवल अतीत की घटनाओं और तथ्यों को जानने के लिए नहीं पढ़ते, बल्कि उसको जानने की प्रक्रिया में हम बहुत कुछ सीखते हैं। वर्तमान की छोटी– सी दुनिया से बाहर निकलकर हम ऐसी दुनिया में प्रवेश करते हैं, जिनका जीवन हम से भिन्न होता है। उनकी जीवनशैली को समझने के लिए हमें नए तरीके सीखने पड़ते हैं। यह हमारे लिए अत्यधिक शिक्षाप्रद और अनुभव को बढ़ाने वाला होता है। हम स्वयं क्या हैं? यह समाज क्या है? यह समाज चलता कैसे है? और जो वर्तमान दुनिया है उसको यह रूप कैसे मिला ? – यह सब हम इतिहास पढ़ कर ही समझ सकते हैं। अतः हम कह सकते हैं इतिहास केवल अतीत की घटनाओं और तथ्यों का विवरण मात्र नहीं होता, बल्कि राजनीतिक , सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में हो रहे परिवर्तनों की खोज और उसकी व्याख्या करना इतिहास का प्रयोजन होता है। ठीक इसी प्रकार साहित्य का भी इतिहास होता है, जिसमें मात्र रचनाओं और रचनाकारों का विवरण नहीं होता, बल्कि साहित्य में हो रहे परिवर्तनों की खोज और उसकी व्याख्या तथा परंपराओं और प्रवृत्तियों का मूल्यांकन एवं विश्लेषण करना होता है। इतिहास में जहां मुख्य रूप से घटनाओं एवं तथ्यों का विवेचन और विशलेषण होता है, वहीं साहित्य के इतिहास में सामान्य जन की चित्तवृत्तियों का सूक्ष्म विवेचन एवं विश्लेषण होता है। इतिहास जहां एक ओर अतीत और वर्तमान के मध्य संबंध स्थापित करता है वहीं दूसरी ओर अतीत को भविष्य से जोड़ता भी है। इसलिए एक सार्थक जीवन जीने के लिए और जीवन को सही तरह समझने के लिए, इतिहास को जानना या पढ़ना अति आवश्यक है।

हिंदी साहित्य के इतिहास –लेखन की एक

सुदीर्घ एवं सशक्त परंपरा रही है। 19वीं शताब्दी से हिंदी साहित्य के लेखन की परंपरा प्रारंभ होती है इसके पूर्व चौरासी वैष्णवन की वार्ता,दो सौ वैष्णवन की वार्ता (गोकुल नाथ), भक्तमाल (नाभादास), कविमाला (तुलसी), कालिदास हजारा(कालीदास त्रिवेदी) आदि ऐसे ग्रंथ हैं जिनमें हिंदी के विभिन्न रचनाकारों के जीवन– वृत्त और कृतित्व का परिचय मिलता है, किंतु इन्हें इतिहास ग्रंथ की संज्ञा नहीं दी जा सकती। इसमें न तो कोई कालक्रम है न सन–संवत् और न ही कवियों का मूल्यांकन, इसलिए इन्हें इतिहास न कह कर इतिवृत्त कहा जाता है।

हिंदी साहित्य के इतिहास को लिखने का प्रथम प्रयास फ्रेंच विद्वान गार्सा द तासी ने अपनी पुस्तक "इस्त्वार द ला लितरेत्युर ऐन्दुई ए ऐंदुस्तानी" लिखकर किया। इसका प्रथम भाग 1839 ईसवी में तथा दूसरा 1847 ई0 में प्रकाशित हुआ। 1871 ई0 में इसका दूसरा संस्करण पर्याप्त संशोधन के साथ तीन खंडों में प्रकाशित हुआ। इसमें कवियों को वर्ण क्रमानुसार रखा गया है, जो दोषपूर्ण है। काल– विभाजन तथा युगीन प्रवृत्तियों को कोई स्थान प्राप्त नहीं है। अतः इसे इतिहास न कह कर बस, कवियों का एक वृत्त– संग्रह कहा जाता है। इसका महत्व बस इसीलिए है कि एक विदेशी विद्वान ने हिंदी साहित्य का प्रथम इतिहास लिखा जो हम सबके लिए एक बहुत बड़ी प्रेरणा है।

हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा में दूसरा स्थान शिव सिंह सेंगर का आता है जिनका इतिहास ग्रंथ" शिव सिंह सरोज" 1883 ईस्वी में प्रकाशित हुआ। इसमें कुल 1000 से अधिक कवियों का उल्लेख है। यह ग्रंथ भी कवियों का केवल संग्रह मात्र है , इसका महत्व बस इसीलिए है कि यह हिंदी भाषा में लिखा हुआ पहला इतिहास ग्रंथ है।

जॉर्ज ग्रियर्सन की पुस्तक "वर्नाकुलर लिटरेचर ऑफ हिंदुस्तान "हिंदी साहित्य के इतिहास का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यह एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की पत्रिका के विशेषांक रूप में 1888 ई0 में प्रकाशित हुआ था। यह सच्चे अर्थों में हिंदी साहित्य का इतिहास है। इस ग्रंथ के प्रमुख उल्लेखनीय तथ्य इस प्रकार हैं–

1– कवियों और लेखकों को कालक्रमानुसार वर्गीकृत कर उनकी प्रवृत्तियों को उद्घाटित किया गया है।

2– विभिन्न युगों की काव्य प्रवृत्तियों की व्याख्या की गई है।

3– सांस्कृतिक परिस्थितियों एवं प्रेरणा स्रोतों का भी उद्घाटन किया गया है।

4– सर्वप्रथम इसी ग्रंथ में हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन कर उसका नामकरण किया गया है ।

हिंदी साहित्य के इतिहास– लेखन की परंपरा यह ग्रंथ अपना एक विशिष्ट स्थान तो रखता अवश्य है, तथापि कुछ त्रुटियां रह गयीं हैं, जिनका उल्लेख विद्वानों ने किया है। हिंदी साहित्य के इतिहास के वर्गीकरण में एकरूपता नहीं है। ग्रंथ के अध्याय ही हिंदी साहित्य के इतिहास के विभिन्न काल हैं।

मिश्र बंधुओं ने "मिश्र बंधु विनोद" के नाम से हिंदी साहित्य का इतिहास ग्रंथ लिखा, जिसमें लगभग 5000 कवियों को स्थान दिया गया है। मूलतः यह काव्य संग्रह है। हिंदी साहित्य के इतिहास को आठ कालों में विभाजित किया गया है। यह वास्तव में इतिहास ग्रंथ न होकर "साहित्यकार कोश" अधिक लगता है। इसका प्रथम प्रकाशन 1913 ई0 मेंऔर द्वितीय प्रकाशन 1934 ई0 में हुआ था।

हिंदी साहित्य का सुव्यवस्थित एवं क्रमबद्ध इतिहास आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा लिखा गया। 1929 ईस्वी में "हिंदी शब्द सागर" की भूमिका के रूप में आचार्य शुक्ल ने हिंदी साहित्य का विकास लिखा था, जो बाद में "हिंदी साहित्य का इतिहास" के नाम से एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुई। आचार्य शुक्ल की इतिहास– दृष्टि उन्हीं के शब्दों में – " जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है, तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ– साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अंत तक इन्ही चित्त– वृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना साहित्य का इतिहास कहलाता है। जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, सांप्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है।" अपनी उपर्युक्त मान्यताओं के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य का एक वैज्ञानिक इतिहास प्रस्तुत किया, जिस की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं –

1– युगीन परिस्थितियों के संदर्भ में साहित्य के विकास क्रम की व्याख्या की।

2– हिंदी साहित्य की 900 वर्षों के इतिहास को चार मुख्य भागों में बांट कर उनकी प्रवृत्तियों के अनुसार उनका नामकरण किया, जो परवर्ती इतिहासकारों और पाठकों के लिए प्रतिमान बना।

3– कवियों एवं साहित्यकारों के जीवन– चरित्र के इतिवृत्त के साथ–साथ उनकी रचनाओं और साहित्यिक अवदान की विस्तार से चर्चा की।

4– कवियों एवं साहित्यकारों का परिचयात्मक विवरण न देखकर साहित्यिक प्रवृत्ति के आधार पर उनका वर्गीकरण किया एवं मुख्य कवि और फुटकल कवि के रूप में उनका स्थान निर्धारित किया।

5–पूर्ववर्ती इतिहास ग्रंथों की तरह उनका इतिहास ग्रंथ

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

तथ्यांकन मात्र नहीं, बल्कि गंभीर अध्ययन और चिंतन का परिणाम है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के बाद, आचार्य रामचंद्र शुक्ल की ही अवधारणाओं को मानकर नागरी प्रचारिणी सभा के द्वारा अट्ठारह खंडों में," हिंदी साहित्य का वृहत इतिहास" लिखा गया, जो नागरी प्रचारिणी सभा काशी की एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

हिंदी साहित्य के इतिहास के लेखन की परंपरा में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का विशिष्ट स्थान है ।आप द्वारा हिंदी साहित्य के इतिहास से संदर्भित तीन पुस्तकें लिखी गई

1– हिंदी साहित्य की भूमिका
2– हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास
3– हिंदी साहित्य का आदिकाल

उपर्युक्त तीनों पुस्तके हिंदी साहित्य के इतिहास– लेखन परंपरा में अत्यधिक महत्वपूर्ण है ।आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिंदी साहित्य के इतिहास– लेखन की परंपरा में एक नई दृष्टि, नई पद्धति और नई व्याख्या लेकर आए। आचार्य रामचंद्र शुक्ल की युगीन पृष्ठभूमि की एकांगी विचारधारा के समानांतर आचार्य द्विवेदी ने परंपरागत दृष्टिकोण को स्थापित कर, एक व्यापक एवं संतुलित इतिहास– दर्शन की भूमिका तैयार की ।आचार्य द्विवेदी ने परंपरा को अधिक महत्व दिया। परंपरा और युगीन परिस्थितियों के सम्यक् मूल्यांकन से एक संतुलित इतिहास– लेखन का कार्य संभव हो सका। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और रामचंद्र शुक्ल दोनों एक दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक बनकर आए। परवर्ती इतिहासकारों ने परंपरा और युगीन परिस्थितियों के मध्य संतुलन स्थापित कर हिंदी साहित्य के लेखन की परंपरा को समृद्ध किया।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के बाद इतिहास लेखन में डॉ रामकुमार वर्मा का नाम उल्लेखनीय है। डॉक्टर रामकुमार वर्मा ने 1938 में" हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास" लिखा। इस इतिहास ग्रंथ के उल्लेखनीय तथ्य इस प्रकार हैं 1– भक्तिकाल के निर्गुण काव्यधारा की दो शाखाओं – जिसका नाम आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने प्रेमाश्रयी शाखा और ज्ञानाश्रयी शाखा रखा था उसको संक्षिप्त करके डॉ रामकुमार वर्मा ने प्रेम काव्य और संत काव्य कर दिया।
2– आचार्य रामचंद्र शुक्ल की वीरगाथा काल को डा0 रामकुमार वर्मा ने दो भागों में बांट दिया– 1–संधिकाल 2– चारण काल। संधिकाल में अपभ्रंश काल की रचनाओं को पृष्ठभूमि के रुप में रखा। हिंदी साहित्य के आदिकाल को दो काल खंडों में बांटने का कोई तार्किक आधार नहीं है, इसलिए परवर्ती विद्वानों द्वारा यह काल विभाजन स्वीकार नहीं किया गया। डॉ रामकुमार वर्मा के पश्चात कई महत्वपूर्ण इतिहासकारों के नाम हैं जिन्होंने हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा को अत्यधिक समृद्ध किया है। प्रायः सभी विद्वानों ने इतिहास– लेखन में आचार्य रामचंद्र शुक्ल और आचार्य हजारी प्रसाद की ऐतिहासिक दृष्टियों को ही आगे बढ़ाने या उसे समृद्ध करने का प्रयास किया है। ब्रजरत्न दास का "खड़ी बोलीः हिंदी साहित्य का इतिहास "(1948ई0), गणपति चंद्र गुप्त का "हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास "(1968ई0), डा0 मोहन अवस्थी का "हिंदी साहित्य का अद्यतन इतिहास "(1971ई0), डॉ नगेंद्र का "हिंदी साहित्य का इतिहास "(1973ई0), डॉक्टर रामस्वरूप चतुर्वेदी का "हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास "(1986ई0),बच्चन सिंह का "हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास " आदि महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथ हैं ।

*****